राजस्थान में बालिका विकास अभियान

कमला भसीन

पिछले पांच-छः सालों से राजस्थान के कुछ ज़िलों में महिला विकास कार्यक्रम चल रहा है। इस कार्यक्रम से महिलाओं की स्थिति में बहुत बदलाव आए हैं और औरतों की समस्याओं पर बहुत चर्चा शुरू हुई है। इस कार्यक्रम के बारे में 'सबला' में कई लेख और गीत छपे हैं।

बालिका-वर्ष 1990 में इस कार्यक्रम ने एक और ठोस क़दम उठाया। वह था बालिकाओं की स्थिति को समझने का ताकि बालिकाओं की स्थिति सुधारी जा सके। 1990 में लगभग सभी ज़िलों में बालिकाओं की समस्याओं पर बातचीत की गई, गीत और नारे बनाए गए। कई छोटे-छोटे टी.वी. प्रोग्राम भी बनवाए गए। 1990 के अंत में इस कार्यक्रम से जुड़े लोगों ने बालिका विकास के लिए एक सुनियोजित अभियान शुरू करना तय किया। उन्हें लगा कि यह समस्या इतनी जटिल है कि छुटपुट कार्यक्रमों से काम नहीं चलेगा।

राजस्थान के 17 ब्लाकों में यह अभियान शुरू किया जा रहा है। इस अभियान में नारों, गीतों, पोस्टरों, नाटकों, फिल्मों के माध्यम से बालिकाओं की समस्या पर गांव-गांव में बातचीत शुरू की जायेगी। लड़कियों के लिए बालिका-मेले लगाए जाएंगे और ज़रूरत के अनुसार कुछ ठोस कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे। इस अभियान में खास ध्यान चार मुद्दों पर दिया जा रहा है—

बालिकाओं की सेहत और खान-पान

बालिकाओं की शिक्षा

बाल-विवाह

बालिकाओं के बारे में सामाजिक सोच

यह अभियान कोशिश करेगा कि बाल-विवाह कम किए जाएं। ज़्यादा से ज़्यादा बच्चियों को स्कूलों में भरती किया जाए। बच्चियों के स्वास्थ्य की तरफ ज़्यादा ध्यान दिया जाए और बेटे-बेटी में किए जाने वाले भेद-भाव को कम किया जाए।

जनवरी 1991 में इस अभियान की संचालिकाओं की पांच दिन की ट्रेनिंग की गई। इस ट्रेनिंग में लगभग 75 महिलाओं ने भाग लिया। अब ये महिलाएं हर ब्लाक में 50 गांवों से एक-एक महिला ले कर उनकी पांच दिन की ट्रेनिंग करेंगी। यानि 850 गांवों की महिलाओं की ट्रेनिंग होगी। फिर ये महिलाएं छोटी-छोटी टीमें बना कर 850 गांवों में एक या दो दिन के बालिका शिविर करेंगी। इन शिविरों में गांव की

–बिंदिया थापर

औरतों, मर्दों, बच्चों के साथ बात-चीत की जाएगी। उनसे बच्चियों की हालत के बारे में पूछा जाएगा। उनसे जानकारी ली जाएगी और उन्हें जानकारी दी भी जाएगी। इस बात की चेतना जगाने की कोशिश की जाएगी कि बेटे और बेटी में फ़र्क करने से बेटी का ही नहीं, पूरे परिवार और पूरे समाज का नुकसान होता है। जगह-जगह यह संदेश पहुंचाया जाएगा कि

खुशहाल बालिका भविष्य देश का

इस अभियान के लिए राजस्थान सरकार ने काफी सामग्री तैयार की और करवाई है। एक पुस्तक छापी गई है *"हमारी बेटियां: इंसाफ के इंतज़ार में"*। एक छोटा पर्चा छापा है। एक पुस्तिका नारों और गानों की बनाई है। बहुत से पोस्टर तैयार किए हैं, बाल-विवाह पर राजस्थानी गानों के दो कैसेट बनाए हैं। गांवों में दिखाने के लिए तीन-चार वीडियो फ़िल्में भी चुनी हैं। इस कार्यक्रम में लगी साथिनों और प्रचेताओं ने कई नाटक भी बनाए हैं।

तैयारी को देख कर लगता है कि इस अभियान से ज़रूर कुछ बदलाव आएगा। राजस्थान में इस बदलाव की बहुत ज़रूरत भी है। हमें उम्मीद है कि यह अभियान सिर्फ 850 गांवों तक ही सीमित नहीं रहेगा। अब तक राजस्थान बाल-विवाह, महिला निरक्षरता, सती के लिए जाना जाता रहा है। अब राजस्थान की महिलाएं इस राज्य की तस्वीर बदलने के लिए मैदान में उतरी हैं। राजस्थान अब इन हिम्मत वाली महिलाओं के नाम से जाना जाएगा। ये महिलाऐ कह रही हैं—

क्यों अंधकार को कोसे जाएं
अच्छा है इक दीप जलाएं

□